उपसंहार

इस चौथे साल की समाप्ति पर मैंने स्टोनी ग्रोव छोड़ दिया। अगर मैं इन पृष्ठों में इन बच्चों को ज़रा भी जीवन्त बना सकी हूँ तो आपके मन में यह सवाल उठ रहा होगा, "आखिर इन बच्चों का आगे क्या हुआ? वे अब क्या कर रहे हैं?" इन प्रश्नों के जवाब इतने अहम हैं कि उनके बिना इस किताब का उद्देश्य पूरा नहीं होगा।

एना ओल्सेउस्की और ओल्गा प्रिन्लैक ने हमारे स्कूल को सबसे पहले छोड़ा था। एना कस्बे के हाई स्कूल में दाखिल हुई और उसने ऑनर्स के साथ पढ़ाई खत्म की। फिर वह हमारे समुदाय से निकल गई और एक बड़े शहर में सेक्रेटरी पद पर काम करने लगी।

ओल्गा को हाई स्कूल में पढ़ने की अनुमति नहीं मिली, क्योंकि उस वक्त उसके पिता का शिक्षा में भरोसा नहीं था, खासकर लड़कियों के लिए। ओल्गा को न्यू यॉर्क में घरेलू कामकाज करने भेजा गया। अपनी पहली बचत से उसने अपने दाँतों का इलाज करवाया। उसके बाद से वह नियमित रूप से घर पर पैसे भेजती रही है ताकि उसके छोटे भाई-बहनों के लिए कपड़े खरीदने में परिवार को मदद मिले। अपने माता-पिता को अपनी छोटी बहनों की पढ़ाई जारी रखने को मनवाने में उसकी काफी भूमिका रही है।

फ्रैंक प्रिन्लेक, रैल्फ जोन्स और कैथरीन सामेटिस ने जून 1938 में स्टोनी ग्रोव छोड़ा।

फ्रैंक कुछ समय तक एक बड़े फल-बागान में काम करता रहा। एक दिन जब मैं काउंटी के दौरे पर थी तो मैं दोपहर का खाना खाने एक ढाबे में रुकी। अन्दर एक कर्मचारी किसी पुरुष से कह रही थी, "शर्त लगाती हूँ कि फ्रैंक को खोने का तुम्हें बड़ा दुख हो रहा होगा।" "दुख!" वह बोल उठा, "वह अब तक का

मेरा सबसे उम्दा वर्कर रहा है। अगर वह अंकल सैम (अमरीकी सरकार) के लिए काम करने न जा रहा होता, तो मैं किसी को उस पर हाथ न धरने देता!" ये लोग फ्रैंक प्रिन्लैक के बारे में बतिया रहे थे। फ्रैंक अब नौसेना में है।

रैल्फ नौसेना के हवाई दस्ते के ज़मीनी दल में है। हाई स्कूल से निकलने के बाद उसने कुछ समय तक एक गैराज में काम किया और तब युद्ध से सम्बन्धित कार्य में लगा रहा। रैल्फ हाई स्कूल में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाया था। उसकी एकमात्र रुचि मशीनों में थी। अब वह वही काम कर रहा है जो उसे सच में पसन्द है, उसके हाल के खुशनुमा खत से यह साफ नज़र आता है।

इस बसन्त एक रात मुझे कैथरीन और सोफिया ने रात के खाने पर बुलाया। उनका घर आठ साल पूर्व के उस दिन से विपरीत बिलकुल साफ-सुथरा था जब मैं पहली बार उसमें घुसी थी। लड़कियों ने खाना पकाया था। भुनी मुर्गी; आलू का भरता; मटर की साबुत फलियाँ; सेब, मूली और हरी पत्तियों का सलाद; वैनिला पुडिंग; और श्रीमती सामेटिस और मेरे लिए कॉफी व बाकी सबके लिए दूध। सलाद बनाने की विधि कैथरीन ने मिस मोरान के प्रदर्शन के दौरान सीखी थी। मैंने कैथरीन को सधे हाथों से सेब काटते और दक्षता से सलाद में नमक-कालीमिर्च आदि डाल, पलटते देखा। यह स्पष्ट था कि वह यह सब केवल मेहमान की मौजूदगी के कारण नहीं कर रही थी, बल्कि उसे ऐसा करने का काफी अभ्यास था।

दोनों लड़कियाँ खुद सिले हुए लिबास पहने थीं। सोफिया ने मुझे अपने नए, बसन्त के कपड़े दिखाए जो उसने बड़ी सूझबूझ के साथ खरीदे और सिले थे। कैथरीन ने मुझे वह सुन्दर छींटदार कपड़ा भी दिखाया जो उन्होंने अपनी बैठक के दीवान का कवर बनाने के लिए खरीदा था।

उस शाम मुख्य बातचीत इसी के इर्द-गिर्द रही कि लड़कियों के लिए युद्ध सम्बन्धी कार्य बेहतर होगा या निजी सचिवों के रूप में काम करने न्यू यॉर्क जाना, जिसके लिए उन्होंने अब तक तैयारी की थी। हाई स्कूल की पढ़ाई खत्म करने के बाद कैथरीन पास के एक शहर में एक डॉक्टर की सचिव व सहायिका के रूप में काम करती रही थी। सोफिया ने पिछले साल हाई स्कूल खत्म किया था। समस्या के सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद लड़कियों ने तय किया

कि गर्मियाँ खत्म होने के बाद वे न्यू यॉर्क जाएँगी। वे वहाँ अपनी मौसी-मौसा के साथ तब तक रहेंगी जब तक उन्हें वह काम नहीं मिल जाता जो वे करना चाहती हैं।

उस शाम कुछ समय बाद श्रीमती सामेटिस ने मुझसे कहा, "पता है, मैं कभी नहीं सोचती थी कि मैं अपने बच्चों पर गर्व महसूस करूँगी, पर सच में मुझे उन पर नाज़ है।"

सन् 1939 की पतझड़ से सोफिया सामेटिस, डॉरिस एण्ड्रयूस्, मेरी ओल्सेउस्की व रूथ थॉमसन हाई स्कूल में दाखिल हुईं। वार्षिक सत्र खत्म होने पर हाई स्कूल ने बच्चों को अच्छी पढ़ाई व श्रेष्ठ नागरिकता के लिए प्रशस्ति पत्र दिए। यह निचली कक्षाओं के हर कक्षा में से तीन छात्र/छात्राओं को दिए गए। इसे पाने वाले जूनियर छात्रों में एक थी एना। जिन तीन नई छात्राओं को प्रशस्ति पत्र मिला वे थीं रूथ, सोफिया तथा मेरी। स्टोनी ग्रोव से जाने वाले बच्चे हाई स्कूल में दाखिल होने वाले कुल छात्र-छात्राओं का मात्र 4 प्रतिशत हैं। फिर भी पुरस्कार पाने वाले बच्चों में लगभग 50 प्रतिशत बच्चे स्टोनी ग्रोव के पूर्व छात्र थे।

डॉरिस और मे उस साल समुदाय से बाहर निकलीं और उनसे सम्पर्क टूट गया। मेरी शहर में सेक्रेटरी के पद पर काम कर रही है। रूथ गत वर्ष हाई स्कूल से उत्तीर्ण हुई और अब उसका विवाह एक विमान चालक से हो गया है। वह अपने सपनों का घर-संसार बसाने को उत्सुक है। रूथ निश्चय ही एक अच्छी पत्नी और माँ बनेगी। उसमें असामान्य मात्रा में अच्छी व्यावहारिक बुद्धि है।

थॉमस लैनिक, एडवर्ड वेनिस्की, जॉर्ज प्रिन्लैक व वॉरेन हिल 1940 की बसन्त में स्टोनी ग्रोव से निकले। हमने हेलेन ओल्सेउस्की को भी हाई स्कूल भेज दिया क्योंकि वह तेज़ी से परिपक्व होती जा रही थी और उसे अपने हमउम्र बच्चों की दोस्ती और चुनौती की आवश्यकता थी।

दो महीने की अवधि में ही वॉरेन ने अपने से ज़्यादा संस्कारित कस्बाई बच्चों को इतना प्रभावित कर लिया था कि उन्होंने उसे नवागन्तुक छात्र-छात्राओं की कक्षा का अध्यक्ष चुन लिया। अगले साल हेलेन द्वितीय वर्ष की कक्षा की अध्यक्षा बनी। जब हेलेन और वॉरेन जूनियर कक्षा में पहुँचे तो उन्होंने कठपुतलियों में अपनी रुचि को फिर से जगाया और अपने कला शिक्षक की

मदद से अपने सहपाठियों को उनका प्रदर्शन करना सिखाया। इस साल जब बसन्त में उनका अन्तिम सत्र समाप्त हुआ तो विदाई समारोह में सर्वश्रेष्ठ वक्ता होने के नाते हेलेन ने ही छात्र-छात्राओं की ओर से विदाई भाषण दिया था।

जॉर्ज हाई स्कूल नहीं गया। उसने कुछ समय नागरिक संरक्षण दल के सदस्य के रूप में बिताया और उम्दा रिकॉर्ड के साथ वहाँ से विदा ली। अब वह नौसेना में है।

एडवर्ड ने सोलह वर्ष की आयु तक हाई स्कूल में पढ़ाई की और तब, क्योंकि हाई स्कूल में सीखने लायक उसे कुछ नहीं मिला, उसने फार्म पर काम करने के पक्ष में पढ़ाई छोड़ी। उसने निश्चित रूप से अपने लिए सही विषय चुना – व्यावसायिक कृषि। कृषि प्रयोगशाला में वह खुश था पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम इन सुस्त रफ्तार बच्चों के लिए समग्र विकल्प नहीं है।

अगर हाई स्कूल उस स्तर से शुरू करने को प्रस्तुत होता जहाँ एडवर्ड था, तो स्कूल उसे बहुत कुछ सिखा सकता था। बढ़ती परिपक्वता के हर स्तर पर एडवर्ड छपी सामग्री का पूरा-पूरा अर्थ समझ सकता था – अखबारों से, पत्रिकाओं से, किताबों से व कृषि सम्बन्धी सामग्री से। वह स्वयं को बेहतर तरीके से अभिव्यक्त करना सीख सकता था। वह नए व्यापक समाज में अपना अधिकतम योगदान दे सके, ऐसी तैयारी में स्कूल उसकी मदद कर सकता था। दूसरे शब्दों में, एडवर्ड उस दिशा में विकसित हो सकता था जिस दिशा का बयान इस पुस्तक में किया गया है।

शिक्षा को हमें विकास के रूप में देखना चाहिए और इस विकास को एक ऐसी सतत प्रक्रिया के रूप में जो उतनी ही लम्बी होती है जितना लम्बा हमारा जीवन। पर एडवर्ड के लिए बढ़ने की यह प्रक्रिया हाई स्कूल में ही थम गई, और न जाने इस देश के कितने ही दूसरे बच्चों के लिए! सीखने और बढ़ने के बदले ऐसे बच्चे धीरज धर स्कूलों में बैठे उस दिन की राह ताकते हैं जब वे "कानूनन" स्कूल "छोड़" सकते हैं। हमारे लोकतंत्र के मानव संसाधनों का कितना भारी अपव्यय है यह!

थॉमस भारी उम्मीदों के साथ हाई स्कूल गया था। वह सच में कुछ बनना चाहता था। वह अपनी सौतेली माँ को यह बता देना चाहता था कि उसमें भी कुछ

"खासियत" है। वह हाई स्कूल में छह महीने ही टिक सका। एक रोज़ वह मेरे पास आया और बोला, "मैंने स्कूल छोड़ दिया है, मिस वेबर। मुझे सभी टीचरों की झाड़ सुननी पड़ती है क्योंकि मैं किताबों की बातें सीख नहीं सकता। लगता है मैं अपना समय ज़ाया कर रहा हूँ।" मैंने उससे देर तक बातचीत की, कोशिश यह की कि उसका खुद पर भरोसा फिर से जगा सकूँ, समझा सकूँ कि अगर वह पढ़ाई में सार्थकता नहीं खोज पाता तो इसमें गलती सिर्फ उसकी नहीं है। थॉमस ने एक छोटी फैक्टरी की फोटोग्राफी लैब में काम करना शुरू किया। जल्दी ही उसने इतने पैसे बचा लिए कि वह एक दुरुस्त हाल पुरानी कार खरीद सके। तब से वह अक्सर मुझसे मिलने आने लगा। उसके चुस्त-दुरुस्त कपड़ों व आत्मविश्वास से भरे आचरण से मुझे लगा कि वह बिलकुल ठीक-ठाक है। एक दिन उसने मुझे बताया कि उसने कितनी बचत कर ली है। जब मैंने पूछा कि वह बचत आखिर कर क्यों रहा है, तो उसका जवाब था, "ज़ाहिर है आगे कभी मेरी इच्छा किसी से शादी करने की होगी, आपको तो पता है कि गृहस्थी शुरू करने के लिए काफी पैसों की दरकार होती है।"

थॉमस नियमित रूप से अखबार पढ़ता और हम सरकार और दुनिया के बारे में लम्बी चर्चाएँ करते। उसका मत हमेशा तथ्यों पर आधारित होता और वह अन्धी भावनाओं के बहाव में कभी नहीं बहता। थॉमस भी अब नौसेना में है। सशस्त्र बलों में वह एक ऐसा सदस्य है जो वास्तव में यह समझता है कि हम युद्ध किसलिए लड़ रहे हैं!

एण्ड्रयू डूलियो और कार्टराइट बच्चों ने 1939-1940 की सर्दियों में स्टोनी ग्रोव स्कूल छोड़ा और लॉयड मैथ्यूस ने उसी साल के अन्त में। कार्टराइट परिवार इस इलाके से ही चला गया, सो उनसे मेरा सम्पर्क टूट गया।

एण्ड्रयू ने नए स्कूल में पढ़ाई तो पूरी की पर वह काफी पीछे रहा और तब अपने पिता के खेत में काम करने लगा। कुछ समय पहले जब वह अभी स्टोनी ग्रोव में ही था, और मैं एक रोज़ उससे मिलने गई हुई थी, उसने मुझे अपने पिता के पशु दिखाए। उस वक्त उसने कहा था कि वह किसी दूसरे काम के बनिस्बत खेतीबाड़ी ही करना चाहता है। वह अपने हाथों से एक गाय के गले को आलिंगन में लिए हुए था और अपनी गाल गाय की गाल से रगड़ रहा था। "यह गाय बेहद अच्छी है, मिस वेबर" कहते समय उसकी आँखें चमक रही थीं।

लॉयड इसलिए चला गया क्योंकि उसके माता-पिता ने किसी दूसरे राज्य में खेत खरीद लिया। श्रीमती मैथ्यूज़ ने मुझसे कहा कि साल भर स्टोनी ग्रोव में बिताना लॉयड के लिए बहुत फायदेमन्द रहा था। एक आत्म-केन्द्रित बच्चे से, जिसने हमारे क्रिसमस नाटक को लगभग बरबाद ही कर दिया था, वह क्रमशः काफी परिपक्व हो गया और स्कूल के सबसे कुशल अध्यक्ष व हमारे अखबार के सबसे सक्षम सम्पादक के रूप में उभरा।

सितम्बर 1942 में पर्ल प्रिन्लैक, एल्बर्ट हिल और डेनियल कोल ने हाई स्कूल में दाखिला लिया। पर्ल वहाँ एक व्यापारिक (commercial) पाठ्यक्रम कर रही है जबकि एल्बर्ट और डेनियल व्यावसायिक (vocational) कृषि। डेनियल बेहतरीन पढ़ाई कर रहा है और उसमें एक अच्छा किसान बनने के सभी लक्षण हैं।

मार्था भी उस साल हाई स्कूल में दाखिल हुई। चार वर्ष पहले रैल्फ व मार्था को छोड़ जोन्स परिवार के अन्य सभी बच्चों का विवाह हो चुका था। तब उनकी दादी ने तय किया कि वे कामकाज से फारिग हो कुछ आराम के साल बिताएँगी। श्री जोन्स और रैल्फ कस्बे में रहने चले गए और मार्था अपनी एक विवाहित बहन के साथ रहने लगी।

मार्था ने कस्बे की शाला में सातवीं कक्षा में दाखिला लिया, और उसके लिए अगले दो वर्ष दुखदायी सिद्ध हुए। उसने स्वयं को एक ऐसी अनियंत्रित कक्षा में पाया जिसकी शिक्षिका भी कमज़ोर थी। वह स्थिति से असन्तुष्ट थी और नित नई कारगुज़ारियों को नेतृत्व देने लगी। जब बातचीत के दौरान मैंने सुझाया कि वह स्थानीय 4-एच क्लब व गर्ल स्काउट क्लब की सदस्य बन जाए तो उसने कहा, "वे कुछ नहीं करते। बेहद बेवकूफ हैं सब।" जब मैंने उसे याद दिलाने की कोशिश की कि वह स्वयं भी स्थिति को बदलने की कोई चेष्टा नहीं कर रही है, तो उसने जो कहा उसमें मुझे कुछ वर्ष पूर्व के रैल्फ के दृष्टिकोण की प्रतिध्वनि सुनाई दी। वह बोली, "क्या फायदा!" मार्था किशोरावस्था के कठिन दौर से गुज़र रही थी और उसकी मदद के लिए कोई नहीं था। मैं उसकी स्थिति से काफी दूर थी, सो कोई वास्तविक मदद नहीं कर पाई।

अब जब मार्था हाई स्कूल में है, स्थिति जस की तस है। वह जितना कुछ कर सकती है उतना नहीं कर रही है और अपनी तमाम खूबियों को ज़ाया कर रही है। हाई स्कूल कैसे एक उम्दा अवसर को गँवा रहा है!

और स्टोनी ग्रोव स्कूल? मेरे छोड़ने के चार वर्षों पश्चात् उसका भला क्या हुआ?

यद्यपि वेतन कम था और आधुनिक सुविधाओं की आदी किसी युवती के लिए यहाँ रहने की अच्छी जगह और मनोरंजन की कोई सुविधाएँ न थीं, एक नौजवान युवती ने स्कूल की ज़िम्मेदारी सम्हाली। उसकी बड़ी तारीफ थी और कई लोगों ने उसका नाम सुझाया था। यह पढ़ाने का उसका पहला साल था। हमें लगा कि जो कुछ कमी अनुभवहीनता के कारण होगी, वह उसकी ऊँची योग्यताओं से पूरी हो सकेगी। वह संगीत, कला व साहित्य से परिचित थी। वह बेहद अच्छी छात्रा रही थी और कॉलेज के जूनियर वर्ष में श्रेष्ठ छात्रा चुनी गई थी।

क्योंकि हम स्थिति से वाकिफ थे, सो हमने इस युवा शिक्षिका की खूब मदद की। जब मैंने बच्चों को समझाया कि मैंने सहायक शिक्षिका का पद स्वीकार लिया है, तो उन्हें यह भी बताया कि एक नई शिक्षिका का आना उनके लिए अच्छा रहेगा, कि नई शिक्षिका समुदाय के बीच नए विचार लाएगी, ठीक वैसे जैसे नए छात्र व नए परिवार लाते हैं। मैंने यह सब इतनी अच्छी तरह समझाया कि बच्चे नई शिक्षिका का बेताबी से इन्तज़ार करने लगे। यहाँ तक कि आखिरी दिनों में, मुझे स्वीकारना होगा, मुझे कुछ अटपटा-सा अकेलापन महसूस होने लगा। सामान्यतः जिस तरह स्नेह से विदाई दी जाती है वैसा कुछ मेरे साथ इन बच्चों ने नहीं किया। मेरे छोड़ने के सप्ताह भर बाद ही उन्हें याद आया कि उन्हें मुझे कोई विदाई भेंट व पार्टी देनी चाहिए।

तीन दिनों तक नई शिक्षिका मुझे बच्चों के साथ काम करते देखती रही और यथासम्भव मेरी मदद करती रही। इस दौरान मैंने उसे स्कूल व बच्चों के रिकॉर्डों से परिचित करवाया, और पहले सप्ताह की योजना भी हमने मिलकर बनाई।

उस पहले सप्ताह नई शिक्षिका ने बच्चों को स्वयं अपनी गतिविधियों को निर्देशित करने दिया, सो स्कूल सामान्य रूप से चला। शिक्षिका ने भी इस दौरान बच्चों से बहुत कुछ सीखा। परन्तु अगले शनिवार, उसे दी गई तमाम सलाहों के बावजूद, उसने मेज़-कुर्सियों की व्यवस्था को और बुलेटिन बोर्डों पर लगी चार्टों को खुद ही, बच्चों से बिना पूछे बदल डाला।

सोमवार की सुबह जब बच्चे स्कूल पहुँचे तो वे विद्रोह में उठ खड़े हुए। सबसे पहले तो बच्चों का भरोसा जीते बिना ही शिक्षिका ने एक बाहरी व्यक्ति की हैसियत से बच्चों के मसलों में दखलन्दाज़ी की, और यह भी तब जब बच्चे अब तक अपने से सम्बन्धित सभी मामलों के निर्णयों में भागीदारी निभाते आए थे। बच्चों को यह नागवार गुज़रा। यह नाराज़गी भी शायद वे भुला देते बशर्ते कि बदलाव अच्छे होते। बच्चों ने अपने अनुभव से कक्षा में प्राकृतिक रोशनी का अपनी विविध गतिविधियों के लिए सबसे बढ़िया उपयोग करना सीखा था, ताकि उनकी आँखों पर ज़ोर न पड़े। अब उन्होंने पाया कि सारी की सारी मेज़ें खिड़कियों की दिशा में जमा दी गई हैं। इसी प्रकार बच्चे बुलेटिन बोर्ड का बेहतर उपयोग सीख चुके थे, वे उसे विभिन्न प्रकार की सूचनाओं, ज़िम्मेदारियों की सूचियों या चार्टों के लिए काम में लेते थे जो उन्हें बार-बार देखने होते थे। अब बच्चों ने पाया कि उनके चार्ट उनकी पहुँच से बाहर, शिक्षिका की मेज़ के पीछे लगे बोर्ड पर लग गए हैं, और बुलेटिन बोर्ड पर पालतू जानवरों के चित्र लगे हुए हैं जो उस छोटे कमरे के किसी भी हिस्से में लटकाए जाने पर आराम से देखे जा सकते थे। ज़ाहिर है कि शिक्षिका को यह सिखाया गया था, जैसा मुझे भी सिखाया गया था, कि अध्ययन की किसी नई इकाई की शुरुआत से पहले उससे सम्बन्धित आकर्षक चित्र बुलेटिन बोर्ड पर लगाना शुरुआत करने का एक अच्छा तरीका है। पर सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की भागीदारी के बारे में उसने क्या सीखा था? परिस्थिति को भाँपकर अनुकूल निर्णय लेने के बारे में उसने क्या सीखा था? हमारे इस सुसभ्य समाज के अधिकांश लोगों की तरह उसने किसी दूसरे के विचारों और कार्यों के बारे में जानने-सीखने में इतना समय बिताया था कि उसके पास मौलिक व आलोचनात्मक चिन्तन के लिए कोई वक्त ही नहीं बचा था।

इन और ऐसी ही अन्य घटनाओं के चलते बच्चों का उस शिक्षिका में विश्वास नहीं रहा और वह उन्हें दिशा देने की योग्यता खो बैठी।

बच्चों के माता-पिता भी सोच में पड़ गए। क्या उसे बच्चों की और उनकी कोई फिक्र ही नहीं है? उसने उन्हें मिलने की कोशिश ही नहीं की। उन्हें यह तो पता था कि वह काम में इतना नहीं डूबी है कि वह उनसे मिलने की फुर्सत नहीं निकाल पाती, क्योंकि वह अक्सर अपने साथियों के साथ घूमती-फिरती नज़र

आती थी। उनके अनुसार उसने अपनी मित्र-मण्डली को चुनने में भी अक्लमन्दी नहीं दर्शाई थी। वह ग्रामीण रीति-रिवाज़ और शिष्टाचार के बारे में कुछ नहीं जानती थी और न ही जानने-सीखने की उसने कोई कोशिश ही की।

धीरे-धीरे वह स्वयं अपने और कक्षा के रख-रखाव के बारे में बेध्यान हो चली, और कुछ समय बाद बच्चे भी लापरवाह व उदासीन हो गए। वे स्कूल की साफ-सफाई की ज़िम्मेदारियाँ निभाने या "शिक्षिका के लिए काम करने" से इन्कार करने लगे।

स्थिति बद से बदतर होती गई। शुरू में बच्चों ने शिक्षिका से बातचीत कर मसले सुलझाने की चेष्टा की, पर जल्दी ही उनके साझे सत्र शिकायत करने और झगड़ने के सत्रों में तब्दील होने लगे। अन्ततः बच्चों ने कहा, "भई, अगर वे ही सब कुछ जानती हैं, तो उन्हें ही अपनी तरह से सब करने दो।" और तब यह ब्रह्मास्त्र हर ज़िम्मेदारी से पिण्ड छुड़ाने के काम आने लगा।

ऐसा पहली बार नहीं हुआ है कि जो बच्चे आत्म-नियंत्रण के शिखर तक पहुँचे हों वे अगले ही साल किसी दूसरी शिक्षिका के साथ इस कदर अनुशासनहीन बन जाएँ। जिन स्थितियों का मैंने ऊपर बयान किया है, उन स्थितियों में बच्चे अगर आलोचना नहीं करते, चुपचाप वह सब कुछ स्वीकारते जाते जो उनका विवेक गलत ठहरा रहा होता, तो वास्तव में जो कुछ पिछले चार सालों में उन्होंने सीखा था उसका उद्देश्य भी परास्त हो जाता।

लेकिन बच्चों को अपरिपक्व होने के कारण एक मार्गदर्शक की दरकार होती है। इस तथ्य को उसी समय स्वीकार लिया गया था जब इन्सान ने दूसरे लोगों के साथ जीना प्रारम्भ किया था। अगर इसमें सच्चाई न होती तो समाज में शिक्षकों की कोई ज़रूरत ही न होती। परन्तु जब बच्चों का उस व्यक्ति पर से विश्वास उठ जाता है जिसे उन्हें मार्ग दिखाना हो, तो वे भ्रमित हो जाते हैं। अपनी अपरिपक्वता के कारण जिन मसलों को वे स्वयं नहीं सुलझा सकते, उन्हें सुलझाने में उनकी मदद करने वाला कोई व्यक्ति उन्हें तब नज़र नहीं आता।

अगले साल बच्चों को एक परिपक्व व अनुभवी शिक्षिका मिलीं, जिनकी मदद से कुछ हद तक उनकी आदतें फिर सुधर सकीं। दुर्भाग्य से, स्वास्थ्य खराब होने के कारण वे साल भर में ही स्कूल छोड़ने पर मजबूर हो गईं।

इसके बाद युद्ध के कारण पैदा हुई किल्लत के चलते शिक्षक मिलना ही असम्भव हो गया और समुदाय से ही एक महिला ने, जिन्हें पढ़ाने का कुछ अनुभव था, बच्चों को पढ़ाने की ज़िम्मेदारी ली। वे अपनी सीमाएँ जानती थीं और उन्होंने बच्चों से ईमानदारी बरती। बच्चों को उनका ईमानदार नज़रिया पसन्द आया, सो उन्होंने स्थिति का फायदा उठा ज़िम्मेदारियों से बचने के बदले अधिक से अधिक ज़िम्मेदारियाँ स्वीकारीं।

उन गर्मियों में एलिस ने मुझे कहा था, "पता है आपको, मिस वेबर, हमें अब कौन पढ़ाएगा? हमें खुद ही अपने आपको पढ़ाना होगा न!" और ठीक यही बड़े बच्चों ने किया भी। अगर पाठ के किसी बिन्दु पर वे असहमत होते तो उस पर देर तक चर्चा करते, जब तक वे सहमत न हो जाते। वे ऐसे बिन्दुओं की एक सूची बना लेते और उन पर कभी-कभी आने वाली सहायक शिक्षिका से चर्चा करते। वे सभी तरह की किताबें पढ़ते रहे। उनकी पाठ्यपुस्तकों में जिन गतिविधियों को सुझाया गया था उन्हें वे करते रहे। साल के अन्त में उनकी उपलब्धियों की परीक्षा हुई तो उन्हें अपनी कक्षा के औसत स्तर से कहीं अधिक आँका गया।

बच्चे अपने आप जो कुछ कर सकते थे वह सब उन्होंने किया। परन्तु अपरिपक्व बच्चों से यह उम्मीद तो नहीं रखी जा सकती कि वे समूचा काम कर सकेंगे। इस पुस्तक में चौथे साल का जो वर्णन है उसमें ये बच्चे दूसरी, तीसरी और पाँचवीं जमात में थे। उसके बाद के तीन सालों तक उनको सही मार्गदर्शन भी नहीं मिला था। इसके बावजूद उन्होंने जिस आत्मनिर्भरता का परिचय दिया, वह सिद्ध करता है कि अगर शिक्षा की सही अवधारणा को हस्तान्तरित किया जा सके तो वह कितनी असरकार हो सकती है। अगर कुछ ही साल बच्चों पर इतना असर छोड़ सकते हैं तो ज़रा सोचिए कि अगर बच्चों को रचनात्मक व लोकतांत्रिक जीवन का प्रशिक्षण उन बारह वर्षों तक मिलता रहे जो वे सार्वजनिक स्कूलों में बिताते हैं, तो कैसे अद्‌भुत नागरिक तैयार हो सकेंगे!

शाला भवन क्रमशः बिना रख-रखाव के खस्ताहाल हो चला। दरवाज़े और दीवारें गन्दी उँगलियों के स्पर्श से कीचट हो चलीं। चित्रों के फ्रेमों व किताबों आदि पर धूल की तहें नज़र आने लगीं। खेलघर का दरवाज़ा कब्जों से झूल गया और हवा में भड़भड़ाने लगा। जंगली फूलों का रॉक गार्डन खरपतवार से

इतना भर गया कि शेष सब उसके नीचे ही दब गया। यदा-कदा कोई जीवट वाला फूल उस झुरमुट से लड़ सिर उठाता ज़रूर नज़र आ जाता था। वह भी शाला के बच्चों की ही तरह उनके नियंत्रण के बाहर की तमाम विपरीत ताकतों से संघर्ष कर रहा होता था।

हमारा स्कूल भी देश की एक लाख एकल-शिक्षक शालाओं की तरह बनने लगा था और उसका हश्र भी उन जैसा होता लगता था। गत बसन्त शिक्षा बोर्ड को लगने लगा कि शायद स्कूल को बन्द कर बच्चों को कस्बे के स्कूल में भेज देना ही बेहतर होगा। उन्होंने इस मसले पर समुदाय से चर्चा की। पर समुदाय ने एकमत हो इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। केवल दो परिवारों ने, जो हाल ही में बाहर से आकर बसे थे, प्रस्ताव के पक्ष में मत डाला। बच्चों के माता-पिताओं ने मुझसे कहा, "युद्ध हमेशा थोड़े ही चलता रहेगा। शायद किसी दिन हमें फिर से कोई अच्छी शिक्षिका मिलेगी। स्कूल ही तो है जिसने हम सबको परस्पर बाँधे रखा है।" ये लोग जानते हैं कि कोई छोटा-सा स्कूल किसी समुदाय के लिए कितना असरकारी हो सकता है, और वे उसे खत्म नहीं होने देना चाहते हैं।

पिछले सप्ताह मैं फिर से शाला भवन गई। इन गर्मियों में उसकी अन्दर-बाहर से पूरी मरम्मत व पुताई करवाई गई है। गाड़ी में वहाँ से निकलते हुए मैंने अन्तिम बार उसे देखा। वह नन्हा-सा सफेद डिब्बानुमा भवन धूप में मेरी आँखों के सामने चमक रहा था, आठ साल पहले के उस दिन की तरह जब मैंने उसमें अपना विश्वास जताया था। मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा। "किसी दिन इन्हें एक अच्छा शिक्षक ज़रूर मिलेगा," मैंने सोचा। किसी दिन सभी बच्चों को अच्छे शिक्षक मिलेंगे। यही लोकतंत्र की मुख्य आशा है!